अरस्तु (384-322 ई०पू०)

अरस्तु का जन्म स्टीया माईनर की एक यूनानी बस्ती में हुआ। उनके पिता के पूर्वज यूनानी से आए थे। और माता स्टीया माइनर की थी। उनकी द्विमुखी विचारधारा में ये दोनों प्रभाव स्पष्ट रूप से है, एक ओर वे सत्य का अन्वेषण करने वाले दार्शनिक है, दूसरी ओर संसार का निरीक्षण करने वाले वैज्ञानिक भी। तीसरी ओर वे अपने समय तक जितने भी विचार सूत्र इकट्ठे हुए थे उनकी व्याख्या, वर्ग-विभाजन और आलोचना करने वाले विचारक भी थे।

अरस्तु प्लैटो के शिष्य थे, जो स्वयं सुकरात के शिष्य थे, इस प्रकार गुरु शिष्य की परम्परा में बंधे हुए तीनों संसार के महानतम विचारकों में हुए। सुकरात और अरस्तु के समय में भी लगभग २०० वर्ष का अंतर था।

लगभग 17-18 वर्ष की आयु में अरस्तु एथेन्स गए, वहां प्लैटो की अकादमी में दाखिल हुए और उनके निकट आए। प्लैटो इस समय तक अति उदारवाद-चरम के आदर्शवाद पर थे। शुरू में अरस्तु आदर्शवाद से प्रभावित थे,

अरस्तु ने अपनी सूक्ष्म दृष्टि से सभी का विश्लेषण किया और नये संयोजन द्वारा सभी को संश्लेषण प्रणाली में बांधा। अरस्तु इसलिए भी प्रसिद्ध हुए क्योंकि उन्होंने मेसिडोनिया के प्रसिद्ध सम्राट सिकन्दर महान को शिक्षा दी।

Scanned with CamScanner

(Aristotle)

"अरस्तु"

(384 to 322 ई० पू०)

अरस्तु ने कला या सौन्दर्य शास्त्र पर कोई अलग ग्रन्थ नही लिखा। इस सम्बन्ध में उनके विचार उनके प्रसिद्ध ग्रन्थो —
काव्यशास्त्र
अलंकारशास्त्र
तत्वमिमांसा में मिलते हैं.

इन्होने नीति शास्त्र व मनोविज्ञान पर भी पुस्तके लिखी अपने सुप्रसिद्ध ग्रन्थ काव्यशास्त्र, अलंकारशास्त्र व मनोविज्ञान के अन्तर्गत अरस्तु सौन्दर्य व कला पर कही-कही विवेचन करता है यह स्मरण रखना चाहिए कि इन्होने सौन्दर्य पर अलग से ग्रन्थ नही लिखा जैसा कि अन्य विषयों में लिखा।

प्लेटो ने सत्यम् शिवम् सुन्दरम् को एक रूप में जुडा देखा। इसके विपरीत अरस्तु सौन्दर्य को सत्य व शिव से भिन्न मानता है उसने तत्वमीमासा ग्रन्थ मे सौन्दर्य को उपयोगिता से भिन्न माना। जिसे सुकरात ने सौन्दर्य का माप दण्ड माना है।

अरस्तु के अनुसार सौन्दर्य उचित आयाम व उचित व्यवस्था से उत्पन्न होता है इनके अनुसार सौन्दर्य आकृति में है।

अरस्तु ने सौन्दर्य की तीन विशेषताएँ बताई

1) निश्चित आयाम :-)) न बहुत बडा न बहुत छोटा अथवा दोनो के मध्य का।

Scanned with CamScanner

2) **सन्तुलन** => कला के परस्पर अंगों में सन्तुलन हो तभी वह सुन्दर लगेगी।

3) **सामजस्य** :=> किसी भी कलाकृति, वस्तुचित्र काव्य आदि का निर्माण विभिन्न अंगो को मिलाकर होता है। इन अंगों में व्यवस्था या सामुजस्य हो, तभी अव्यवो की व्यवस्था सौन्दर्य उत्पन्न करती है दोनो की विचारधारा मे परस्पर इतना अन्तर था उसने स्पष्ट लिखा है कि सौन्दर्य का दर्शन नेत्रो से होता है अतः शुभ या कल्याण कारी से उसका कोई सम्बन्ध नही है अरस्तु के अनुसार सौन्दर्य एक सुनिश्चित आकार में और अंग प्रत्यंगो के सुव्यवस्थित आकार में और अंग प्रत्यंगो के सुव्यवस्थित क्रम मे होता है।

इनके अनुसार अनुकृत्ति करना कला का परम पावन धर्म है जबकि उसके गुरु के कला की अनुकरणात्म प्रवृत्ति की तीव्र निन्दा की। अरस्तु के अनुसार मानव में अनुकरण करने की प्रवृत्ति बाल्यावस्था से ही स्वभाविक होती है संसार का सर्वश्रेष्ठ प्राणी नकल से ही सीखता है।

"कला प्रकृति की अनुकृत्ति करती है"

अरस्तु के अनुसार अनुकरण बाह्य प्रवृत्ति का नही अपितु मानव की अंतः प्रकृति का होता है उन्होने यहाँ तक कहाँ है कि "प्रत्येक कला व शिक्षा पद्धति का लक्ष्य उन अधूरे कार्यो को पूर्ण करना है प्रकृति से बचे रह गये है" अथवा कला व शिक्षा दोनो प्रकृति के अधूरे कार्य पूर्ण करते हैं। इनके अनुसार अनुकरण कलाकार का स्वाभाविक प्रवृतियो का परिचायक है।

अरस्तु ने लिखा है कि - कला में सौन्दर्य का होना स्वाभाविक है किन्तु सौन्दर्य उसका लक्ष्य नही होता। कला प्रकृति के सम्मुख एक दर्पण का सा कार्य करती है फिर भी कला का लक्ष्य वस्तु के बाह्य आवरण की छाया मात्र उतारना नही बल्कि आन्तरिक महत्व को अभिव्यक्त करना है उच्चतम कला व मास्तिष्क भावना दोनों को आकर्षित करती है सबसे बढ़कर कला का धर्म शुद्धिकरण है इस प्रकार अरस्तु ने भी सभी आदर्श अनुकरण की वकालत की है एक कलाकृति मानव जीवन का आदर्शवादी प्रस्तुति करष है, दर्पण तुल्य छायामात्र नही। यहाँ अरस्तु अपने गुरु प्लेटो के निकट आ जाता है क्योकि वह स्वीकार करता है कि कला उस यथार्थ से आदर्श श्रेष्ठकर होता है और उसने स्पष्ट कि लिखा भी है कि कला उस कार्य को पूर्ण कर देती है जिसे प्रकृति पूर्ण नही करती। "कलाकार प्रकृति के अपूर्ण लक्ष्यो का ज्ञान प्रस्त कराता है।"

कला के उद्देश्य की चर्चा करते हुए अरस्तु लिखता है कि कला का लक्ष्य तत्कालिक आनन्द प्रदान करना होता है उपयोगिता उपयोगी कला का धर्म है ललित कला का नही। उसने कलात्मक अनुकरण का उच्चस्तरीय लक्ष्य अपनाया।

अरस्तु का विवेचन का सिद्धान्त =>(शुद्धिकरण)

विरेचन शब्द का पहला प्रयोग प्लेटो से मिलता है परन्तु इसका विशिष्ट रूप से प्रयोग अरस्तु ने किया। विरेचन (कथारासिस) का अर्थ है मन के दूषित भावो को बाहर निकालना शुद्धि करना। अरस्तु

की दृष्टि में Katharsis (कैथारासिस) कला की पराकाष्ठा है जिसे उसने काव्य का सार तत्व कहा है ललित कला के सम्बन्ध में व्याख्या करते हुए अरस्तु ने कहा है कला का लक्ष्य बौद्धिक तर्क तथा गूढ मनोरंजन प्रदान करना है। आनन्द उच्चस्तरीय या निम्न स्तरीय हो सकता है।

अरस्तु की दृष्टि में कला ज्ञान व खोज का स्त्रोत है न कि नकल करने की आवृत्ति नहीं जैसा की प्लेटो ने इसे कहा है, वह न केवल यथार्थ है बल्कि उसे भी जो सम्भव है प्रस्तुत करती है। कलाकृत्ति मूल वस्तु का प्रतिबिम्ब उतारती है किन्तु वैसा नही जैसी वह अपने आप में होती है वैसी जैसी इन्द्रियों को प्रतीत होती हैं कलाकृत्ति मानव का आदर्श वादी प्रतिबिम्ब होती है "चरित्र, भाव या कार्य का आदर्श यथार्थ से श्रेष्ठ होता है।"

इस प्रकार कला का धर्म केवल बाह्य रूप रंग की अनुकृत्ति मात्र तक सीमित नही आन्तरित महत्व को भी प्रकाशित करना है। सर्वोत्तम कला इन्द्रिय व मन दोनों को आनन्दित करती है अतः कलाकार को इस लक्ष्य प्राप्ति के लिए ध्यान एकाग्र रखना चाहिए।

सौन्दर्य के प्रति मानव सदा से ही आकर्षित रहा है वह प्राकृतिक सौंदर्य से उत्प्रेरित होकर सुन्दर कलाकृत्ति का सृजन करता आया है कलाकृत्ति का प्रभाव भावना पर सीधे पड़ता है. अर्थात कला का सम्बन्ध सीधे भावना से होता है. उसके गुरु प्लेटो ने सारा सांसारिक आनन्द में गन्दगी देखी लेकिन अरस्तु ने इन्हें भोगनीय पाया आगे चर्चा करते हुए अरस्तु

ने लिखा हैं कि "कला कृतियों का रसास्वादन स्वंय कलाकार के लिए ही नही बल्कि प्रेक्षक के लिए भी होता है" कला कृतियां दर्शक की इन्द्रियों व कल्पना दोनों को प्रभावित करती है। इसने कला को मानव मस्तिष्क की मुक्त व स्वावलम्बी गतिविधि कहा हैं।

प्लेटो वाद अरस्तु वाद आध्यात्मिक बौद्धिक दोनों दृष्टिकोण विचार जगत इतिहास में अमर रहे। कला के समस्त विचार को इन दो वर्गो में विभक्त करते है। प्लेटो व अरस्तु के साथ सौन्दर्य दर्शन सम्बन्धि प्रमुख विचार सम्बन्धि दर्शन करने वाली प्राचीन जगत के दार्शनिक बहुत कम थे प्लेटो व अरस्तु आदर्शवादी व यथार्थवादी दोनों के स्तम्भ थे।

कला और सौन्दर्य पर प्लेटो और अरस्तु में भेद:=))

1. **प्लेटो** :=)) 'परम' सुन्दर तत्व को स्वीकार करते है जो सारे सौन्दर्य का प्राथमिक स्त्रोत है। अरस्तु किसी प्राथमिक सौन्दर्य स्त्रोत को स्वीकर नही करते।

2. **प्लेटो** :=)) के अनुसार सत्य शिव सुन्दर तीनो परस्पर मिले हुए है किन्तु अरस्तु शिव और सुन्दर को सम्बन्ध नही मानते।

3. **अरस्तु** :=)) के अनुसार सौंद्रर्य आकार में और शिव गति में इसलिए इन्हे मिलाना उचित नही।

4. **प्लेटो** सौन्दर्य को उपयोगिता से सम्बन्धित मानते है पर अरस्तु सौन्दर्य को उपयोगिता अच्छाई और सत्य से भिन्न मानते हैं।

संक्षेप में कहा जाए तो प्लेटो और अरस्तु की विचारधारा के दो छोर है आत्मवाद व बुद्धिवाद। उसने ही दो नई विचारधारा निकली - आदर्शवादी पक्ष लिया अरस्तु ने यथार्थवादी।

लगभग दो हजार सालो तक पाश्चात्य सौन्दर्य - शास्त्र में इन दोनों के सामान विचारक नही पैदा हुआ।

Scanned with CamScanner